

मुख्यमंत्री ने जनपद प्रयागराज में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
महाशय मसुरियादीन जी की प्रतिमा का अनावरण किया

महापुरुषों का सम्मान करना, उनके इतिहास को संरक्षित रखना और भावी
पीढ़ियों को उनके संघर्ष से परिचित कराना सरकार की प्रतिबद्धता : मुख्यमंत्री

जिस चौराहे पर प्रतिमा स्थापित की गई, उस चौराहे का नामकरण
महाशय मसुरियादीन जी के नाम पर करने के लिए प्रस्ताव भेजा जाए

महाशय मसुरियादीन जी के नाम पर प्रयागराज में किसी एक
उपयुक्त और प्रतिष्ठित संस्था का नामकरण किया जाएगा,
संस्था में उनकी भव्य प्रतिमा भी स्थापित करायी जाएगी

महापुरुषों के सम्मान में किए जाने वाले कार्य केवल वर्तमान पीढ़ी के
लिए नहीं होते, बल्कि वह आने वाली पीढ़ियों को भी अपने इतिहास से जोड़ते

महाशय मसुरियादीन जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान 09 वर्ष जेल में बिताए, जेल
की कठिन परिस्थितियों में रहते हुए आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाने का कार्य किया

महाशय मसुरियादीन जी यू०पी० विधानसभा के
सदस्य रहे, वे 04 बार संसद के लिए निर्वाचित हुए

महाशय जी का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत
के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान था

महाराजा बिजली पासी, मक्का पासी, वीरांगना ऊदा देवी और महाशय मसुरियादीन जी
जैसे महापुरुषों ने समाज तथा राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया

पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के समय महाराजा बिजली पासी
के किले के विकास और उनकी प्रतिमा की स्थापना के लिए कार्य किया गया था

वर्तमान प्रदेश सरकार लखनऊ स्थित महाराजा
बिजली पासी के किले के पुनरुद्धार के लिए कार्य कर रही

लखनऊ में वीरांगना ऊदा देवी पासी के नाम पर
महिला पी०ए०सी० बटालियन स्थापित की जा रही

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार गरीबों
के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही : उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ : 15 अक्टूबर, 2026

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने आज जनपद प्रयागराज में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं संविधान सभा के सदस्य महाशय मसुरियादीन जी की प्रतिमा का अनावरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज इस ऐतिहासिक क्षण में हम अपने उन महापुरुषों की स्मृतियों को

जीवन्त बनाने का कार्य कर रहे हैं, जिन्होंने देश की आजादी, समाज के सम्मान और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज उनका सौभाग्य है कि उन्हें प्रयागराज की इस पावन धरती पर महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महाशय मसुरियादीन जी की भव्य प्रतिमा के अनावरण का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने भारत की आजादी और स्वतंत्र भारत में प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिलाने वाले महापुरुषों की स्मृतियों को नमन किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि 02 अक्टूबर की तिथि ऐतिहासिक और पावन है। इसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती मनायी जाती है। 02 अक्टूबर, 1911 की तिथि महाशय मसुरियादीन जी की जयन्ती है। दुर्भाग्यवश, इतिहास के कालचक्र में महाशय मसुरियादीन जी के योगदान को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसके वह अधिकारी थे। उनके संघर्ष और बलिदान को अपेक्षित रूप से याद नहीं किया गया, लेकिन अब उनकी स्मृतियों को सम्मान देने और उनके योगदान को समाज के सामने लाने का कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि विरासत और विकास में विश्वास करने वाली डबल इंजन सरकार अपने महापुरुषों को विस्मृत नहीं कर सकती। महापुरुषों का सम्मान करना, उनके इतिहास को संरक्षित रखना और भावी पीढ़ियों को उनके संघर्ष से परिचित कराना सरकार की प्रतिबद्धता है। इसी उद्देश्य से महाशय मसुरियादीन जी की भव्य प्रतिमा की स्थापना की गई है, ताकि उनकी स्मृतियाँ सदैव जीवन्त रहें और आने वाली पीढ़ियाँ उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

मुख्यमंत्री जी ने प्रतिमा अनावरण के अवसर पर प्रयागराज के महापौर से कहा कि जिस चौराहे पर महाशय मसुरियादीन जी की प्रतिमा स्थापित की गई है, उस चौराहे का नामकरण उनके नाम पर करने के लिए प्रस्ताव भेजा जाए। महाशय जी के नाम पर चौराहे का नामकरण होने से उनकी स्मृति स्थायी रूप से जुड़ी रहेगी और वहाँ से गुजरने वाले लोगों को उनके जीवन तथा योगदान के बारे में जानने का अवसर मिलेगा। महापुरुषों के नाम पर सार्वजनिक स्थलों का नामकरण करना उनके योगदान को याद रखने तथा भावी पीढ़ियों तक उनकी विरासत पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रयागराज में किसी एक उपयुक्त और प्रतिष्ठित संस्था का नाम भी महाशय मसुरियादीन जी के नाम पर रखा जाएगा। इसके लिए ऐसी संस्था का चयन किया जाएगा, जिससे वर्तमान और भावी पीढ़ियों को उनके जीवन, संघर्ष, राष्ट्रभक्ति और सामाजिक योगदान से प्रेरणा प्राप्त हो सके। चयनित संस्था में महाशय

मसुरियादीन जी की भव्य प्रतिमा भी स्थापित करायी जाएगी। इस प्रकार उनके नाम और योगदान को स्थायी पहचान मिलेगी तथा उनके जीवन से जुड़ी प्रेरणा समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचेगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि महापुरुषों के सम्मान में किए जाने वाले कार्य केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए नहीं होते, बल्कि वह आने वाली पीढ़ियों को भी अपने इतिहास से जोड़ते हैं। जब किसी सार्वजनिक संस्था का नाम किसी स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर रखा जाता है, तो वह नाम उस व्यक्ति के संघर्ष, विचार और राष्ट्र के प्रति समर्पण का संदेश देता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास किसी एक व्यक्ति या परिवार तक सीमित नहीं है। इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों, समाजों और समुदायों के असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान रहा है। भारत की स्वतंत्रता के लिए महाशय मसुरियादीन जी जैसे अनेक महापुरुषों ने भी जेल में रहकर संघर्ष किया। महाशय मसुरियादीन जी ने वर्ष 1932 से 1944 के बीच स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान 09 वर्ष जेल में बिताए और जेल की कठिन परिस्थितियों में रहते हुए भारत की आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाने का कार्य किया। उन्होंने केवल जेल में रहकर यातनाएँ ही नहीं सही, बल्कि बाहर आने के बाद भी जनजागरण द्वारा लोगों को जागरूक करने और स्वतंत्रता आन्दोलन की चेतना को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

जिस महापुरुष ने अपने जीवन के 66 वर्षों में से 09 वर्ष जेल में बिताए हों, उनके त्याग और राष्ट्रभक्ति को कभी भुलाया नहीं जा सकता। सीमित जीवनकाल में इतना बड़ा संघर्ष करना उनके साहस, संकल्प और देश के प्रति समर्पण का प्रमाण है। ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान देश के इतिहास में सम्मानपूर्वक दर्ज होना चाहिए और समाज को भी उनके संघर्ष से परिचित होना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने महाशय मसुरियादीन जी के स्वतंत्रता आन्दोलन के संघर्ष के प्रति जनता के मन में गहरा सम्मान था। इसी जनविश्वास के आधार पर वर्ष 1946 में वह यू0पी0 विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। स्वतंत्र भारत में भी उन्होंने जनप्रतिनिधि के रूप में जनता की आवाज को आगे बढ़ाया और वर्ष 1952 से 1971 के बीच 04 बार संसद के लिए निर्वाचित हुए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वर्ष 1952 में, जब एक संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से 02 सांसद चुने जाने की व्यवस्था थी, उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू और महाशय मसुरियादीन जी दोनों एक साथ निर्वाचित होकर संसद पहुँचे थे। यह तथ्य बताता है कि महाशय जी का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत के राजनीतिक

और सामाजिक जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान था। महाशय मसुरियादीन जी ने संसद में पहुँचकर उन समुदायों के अधिकारों के लिए आवाज उठायी, जिन्हें अंग्रेजी शासन के दौरान अन्यायपूर्ण कानूनों और सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा था। उनका संघर्ष केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि वह समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों को सम्मानजनक जीवन दिलाने के लिए भी प्रतिबद्ध थे।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अंग्रेजों द्वारा वर्ष 1871 में जरायम पेशा कानून बनाया गया, जिसके माध्यम से अनेक समुदायों को अपराध से जोड़कर कलंकित किया गया और उन्हें अपमानजनक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इन समुदायों में ऐसे लोग भी शामिल थे, जिनका इतिहास देश की स्वतंत्रता के संघर्ष, शौर्य और पराक्रम से जुड़ा हुआ था। पासी समाज को भी इस कानून के दायरे में रखकर अपमानित करने का कार्य किया गया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यह कानून सामाजिक अन्याय और भेदभाव का प्रतीक था। इसके कारण अनेक समुदायों को अपनी पहचान, सम्मान और सामान्य जीवन के अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा। ऐसे अन्यायपूर्ण कानून को समाप्त कराने के लिए बाबा साहब डॉ० भीमराव आंबेडकर और महाशय मसुरियादीन जी सहित अनेक महापुरुषों ने आवाज उठायी और संघर्ष किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि इन महापुरुषों के प्रयासों ने उन समुदायों को सम्मानजनक जीवन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, जिन्हें लम्बे समय तक सामाजिक अपमान और भेदभाव का सामना करना पड़ा था। पासी समाज, सोनकर समाज तथा अन्य वंचित और दलित समुदायों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने और उनके सम्मान के लिए कार्य किया। जिन लोगों ने देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक सम्मान के लिए संघर्ष किया, उनके योगदान को भुलाया नहीं जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि पासी समाज का इतिहास साहस, पराक्रम और संघर्ष की अनेक प्रेरणादायी गाथाओं से भरा हुआ है। महाराजा बिजली पासी बारहवीं शताब्दी के वीर शासक थे। उन्होंने लखनऊ और उसके आसपास के क्षेत्रों में 12 गढ़ अर्थात् 12 किले स्थापित किए थे। यह किले उस समय विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध संघर्ष और सुरक्षा की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। महाराजा बिजली पासी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि समाज के विभिन्न वर्गों ने अपने समय में देश, क्षेत्र और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की स्मृतियों को संरक्षित करना और उनके योगदान को जनसामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है। महापुरुषों के इतिहास को केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। उनके

स्मारकों, प्रतिमाओं और ऐतिहासिक स्थलों का विकास करके नयी पीढ़ी को उनके जीवन तथा संघर्ष से परिचित कराया जाना चाहिए।

मक्का पासी ने देश की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए जब मक्का पासी वीरगति को प्राप्त हुए, तब उनकी धर्मपत्नी वीरांगना ऊदा देवी ने संघर्ष की जिम्मेदारी सम्भाली। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा लिया और अंततः देश के लिए अपना बलिदान दिया। वीरांगना ऊदा देवी का जीवन अदम्य साहस, वीरता और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणादायी मिसाल है। उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है। ऐसे वीरों और वीरांगनाओं को सम्मान देना समाज के प्रत्येक वर्ग का दायित्व है। महाराजा बिजली पासी, मक्का पासी, वीरांगना ऊदा देवी और महाशय मसुरियादीन जी जैसे महापुरुषों ने अपने-अपने समय में समाज तथा राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यह गौरव का विषय है कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के समय महाराजा बिजली पासी के किले के विकास और उनकी प्रतिमा की स्थापना के लिए कार्य किया गया था। वर्ष 2000 में महाराजा बिजली पासी की प्रतिमा की स्थापना की गई है। वर्तमान प्रदेश सरकार लखनऊ स्थित महाराजा बिजली पासी के किले के पुनरुद्धार के लिए कार्य कर रही है। इसके लिए डबल इंजन सरकार द्वारा धनराशि उपलब्ध करायी गई है, ताकि इस ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित किया जा सके और उसका समुचित विकास हो।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रदेश में 03 महिला पी0ए0सी0 बटालियन गठित करने का निर्णय लिया गया है। लखनऊ में स्थापित की जा रही महिला बटालियन का नाम वीरांगना ऊदा देवी पासी के नाम पर रखा जा रहा है। वीरांगना ऊदा देवी पासी के सम्मान में भव्य प्रतिमा स्थापित करने का कार्य भी किया जा रहा है। यह प्रयास केवल प्रतिमाओं और स्मारकों की स्थापना तक सीमित नहीं है, बल्कि इन महापुरुषों के योगदान को संस्थागत रूप से सम्मान देने का माध्यम है। जब नयी पीढ़ी इन महापुरुषों के नाम पर स्थापित संस्थाओं, बटालियनों और स्मारकों को देखेगी, तो उसे उनके संघर्ष और बलिदान के बारे में जानने तथा उनसे प्रेरणा लेने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि महापुरुषों का सम्मान किसी एक परिवार तक सीमित नहीं है। देश और समाज के लिए जिन्होंने अपना जीवन समर्पित किया, वह सम्पूर्ण समाज की धरोहर हैं। जिन महापुरुषों ने वंचितों, दलितों और उपेक्षित वर्गों की आवाज को सम्मान दिलाया तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए संघर्ष किया, उन्हें उचित सम्मान मिलना चाहिए। समाज तभी आगे बढ़ सकता है, जब वह अपने इतिहास, अपने संघर्षों और अपने महापुरुषों का सम्मान करता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अतीत को सम्मान देने से वर्तमान सँवरता है और जब वर्तमान मजबूत होता है, तो भविष्य अपने आप उज्ज्वल बनता है। इसलिए सरकार महापुरुषों की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए पूरी मजबूती से कार्य कर रही है। महाशय मसुरियादीन जी जैसे स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान देकर हम आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देते हैं कि राष्ट्र की स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान के लिए किए गए त्याग को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सरकार अपने महापुरुषों की स्मृतियों को संरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध है। उनके संघर्षों को सामने लाने, ऐतिहासिक स्थलों का विकास करने तथा नई पीढ़ी को उनके जीवन से परिचित कराने के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री जी ने महाशय मसुरियादीन जी की पुत्री श्रीमती कमला कुमारी और पौत्र श्री सचिन कुमार को विशेष रूप से सम्बोधित करते हुए कहा कि महाशय जी का सम्मान केवल एक परिवार का सम्मान नहीं है, बल्कि यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान है। उनके योगदान और स्मृतियों के सम्मान में किसी भी प्रकार की आँच नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने परिवार के सदस्यों को आश्वासित किया कि सरकार महाशय जी की विरासत को सम्मान देने तथा उनके योगदान को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार गरीबों के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। प्रदेश में महापुरुषों का सम्मान हो रहा है। आज महाशय मसुरियादीन जी की प्रतिमा का अनावरण इसी सम्मान को प्रदर्शित करता है।

इस अवसर पर जलशक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह, औद्योगिक विकास मंत्री श्री नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी', सांसद श्री प्रवीण पटेल, विधान परिषद सदस्य श्री लालजी प्रसाद निर्मल एवं श्री सुरेन्द्र चौधरी, विधायक श्री हर्षवर्धन वाजपेयी, श्री पीयूष रंजन निषाद, श्री वाचस्पति, श्री दीपक पटेल, श्री गुरु प्रसाद मौर्य, प्रयागराज के महापौर श्री गणेश केसरवानी, महाशय मसुरियादीन जी की पुत्री श्रीमती कमला कुमारी, पौत्र श्री सचिन कुमार सहित परिवार के सदस्यगण तथा अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।